# प्रेस विज्ञप्ति

## समूचे राष्ट्र में पूर्ण शराबबंदी तथा गोहत्या पर पाबंदी का समर्थन करते हुए आर्यसमाज की मांग

नई दिल्ली, 11 अप्रैल, 2017

**संविधान की धारा 47** के अनुसार पूरे राष्ट्र की सभी राज्य सरकारों को पूर्ण शराबबंदी लागू करनी चाहिये। गुजरात में यह पिछले 60 वर्षों से लागू है और शराब के राजस्व के बिना गुजरात का विकास रूका नहीं, वरन् दूसरे राज्यों से अच्छा है। औरतें अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षित हैं। अब पिछले एक साल से बिहार के मुख्यमंत्री नितीश कुमार ने शराबबंदी सफलता पूर्वक दृढ़ता से लागू कर और 5000 करोड़ रुपये की राजस्व हानि को 10 हजार करोड़ रुपये के बचत के साथ बिहार को समग्र विकास की तरफ मोड़ दिया है।

आज उ०प्र०, राजस्थान, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, एवं महाराष्ट्र समेत देश के अनेक राज्यों में महिलाओं ने शराबबंदी को एक उग्र जनान्दोलन में बदलने का सराहनीय काम किया है। यदि समय रहते सभी राज्य सरकारें अपने–अपने क्षेत्र में शराबबंदी लागू नहीं करतीं तो असंतोष का लावा दावानल बनकर फूट पड़ेगा और अभी तक पूर्ण अहिंसक चल रहे आंदोलन को हिंसक बनाने की जिम्मेदारी इन्ही सरकारों की होगी। इस बीच स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पहल करके सभी राज्य सरकारों से शराब बंदी का आग्रह करें–खासकर अपने भाजपा शासित राज्यों में लागू कराने की दिशा में कदम उठाकर अपनी प्रतिबद्धता का परिचय दें। **यदि मोदी जी नोटबंदी लागू कर सकते हैं तो शराबबंदी क्यों नहीं???** इस मुद्दे पर कल 12 अप्रैल को नागपुर में दीक्षा भूमि के निकट **नशा मुक्त भारत आन्दोलन** के माध्यम से आह्वान होगा।

दूसरी तरफ उ०प्र० में योगी आदित्यनाथ की सरकार ने बूचड़खाने बंद करने का अभियान चलाकर **संविधान की धारा 48** के अंतर्गत समूचे गोवंश की हत्या पर पाबंदी का मुद्दा उठा दिया है और जिसे आर०एस०एस० सर संघचालक श्री मोहनभागवत ने अपने समर्थन संदेश से राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती प्रदान कर दी है। गुजरात के मुख्यमंत्री ने एक कदम आगे बढ़कर गुजरात में शाकाहार को प्रतिष्ठित करने का ऐलान किया है। आर्यसमाज इस सांस्कृतिक जागरण का अभिनंदन करता है और इन मुद्दों को साम्प्रदायिकता की राजनीति एवं हिंसक उपायों से बचाकर सच्चे अर्थों में अहिंसक समाज बनाकर महात्मा गांधी के चंपारण सत्याग्रह की शताब्दी को सार्थक तरीके से मनाने का आग्रह करता है।

गोहत्या पर पाबंदी की सफलता के लिए गोबर एवं गोमूत्र को वैज्ञानिक तरीके से कीटनाशक एवं उर्वरक (खाद) में बदलने का जबरदस्त अभियान चलाना होगा। अन्य पशु–पक्षियों की हत्या और मांसाहार के बदले शाकाहार को स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

**महर्षि दयानंद ने 1875 से ही गोकरुणानिधि पुस्तिका लिखकर, गोकृष्यादि रक्षिणी सभा का गठन कर तथा तत्कालीन ब्रिटिश सम्राज्ञी विक्टोरिया को ज्ञापन भिजवाकर जिस अभिनव सांस्कृतिक क्रांति का सूत्रपात किया था आज हम सभी उसे सफल बनाने का संकल्प लेते है और सभी मत मतान्तरों से, सभी पार्टियों से पूर्ण सहयोग की कामना करते हैं।**

**–स्वामी अग्निवेश**